

परिशिष्टम् २ धातुरूपाणि



लकाराः (क्रियापदानां रूपाणि)

सामान्यतः संस्कृतभाषायाम् २००० धातवः सन्ति। तेभ्यः 'तिङ्' प्रत्ययान् योजयामः चेत् ते एव तिङन्ताः भवन्ति। तिङ्-प्रत्ययाः येषाम् अन्ते सन्ति ते तिङन्ताः। अथवा लकाराः इति वक्तुं शक्नुमः।
धातवः त्रिप्रकारकाः भवन्ति –

१. परस्मैपदि-धातवः
२. आत्मनेपदि-धातवः
३. उभयपदि-धातवः

परस्मैपदि-धातूनां लट्-लकारस्य रूपाणि (वर्तमानकालः)

लट्-लकारः (वर्तमानकालः)

| ‘पठ्’-धातुः | | | | | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|-------------|-----------|------------|--------------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | पठति | पठतः | पठन्ति | प्रथमपुरुषः | बालः पठति | बालौ पठतः | बालाः पठन्ति |
| मध्यमपुरुषः | पठसि | पठथः | पठथ | मध्यमपुरुषः | त्वं पठसि | युवां पठथः | यूयं पठथ |
| उत्तमपुरुषः | पठामि | पठावः | पठामः | उत्तमपुरुषः | अहं पठामि | आवां पठावः | वयं पठामः |

एवम् – लिख्, खाद्, वद्, मिल्, हस्, चल्, त्यज्, स्मृ (स्मर्), पा (पिब्), क्रीड्, नी (नय्), प्रच्छ् (पृच्छ्), भू (भव्), दृश् (पश्य्) गम् (गच्छ्) इत्यादयः

| विशेष-धातवः | | | | | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|-------------|---------|-----------|-----------|
| ‘अस्’-धातुः | | | | ‘कृ’-धातुः | | | |
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | अस्ति | स्तः | सन्ति | प्रथमपुरुषः | करोति | कुरुतः | कुर्वन्ति |
| मध्यमपुरुषः | असि | स्थः | स्थ | मध्यमपुरुषः | करोषि | कुरुथः | कुरुथ |
| उत्तमपुरुषः | अस्मि | स्वः | स्मः | उत्तमपुरुषः | करोमि | कुर्वः | कुर्मः |

| ‘श्रु’-धातुः | | | | ‘दा’-धातुः | | | |
|--------------|---------|---------------|---------------|-------------|---------|-----------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | शृणोति | शृणुतः | शृण्वन्ति | प्रथमपुरुषः | ददाति | दत्तः | ददति |
| मध्यमपुरुषः | शृणोषि | शृणुथः | शृणुथ | मध्यमपुरुषः | ददासि | दत्थः | दत्थ |
| उत्तमपुरुषः | शृणोमि | शृण्वः/शृणुवः | शृण्वः/शृणुमः | उत्तमपुरुषः | ददामि | दद्वः | दद्वः |

| 'ज्ञा'-धातुः | | | | 'क्री'-धातुः | | | |
|--------------|---------|-----------|----------|--------------|----------|-----------|-----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | जानाति | जानीतः | जानन्ति | प्रथमपुरुषः | क्रीणाति | क्रीणीतः | क्रीणन्ति |
| मध्यमपुरुषः | जानासि | जानीथः | जानीथ | मध्यमपुरुषः | क्रीणासि | क्रीणीथः | क्रीणीथ |
| उत्तमपुरुषः | जानामि | जानीवः | जानीमः | उत्तमपुरुषः | क्रीणामि | क्रीणीवः | क्रीणीमः |

आत्मनेपदिधातूनां लट्-लकारस्य रूपाणि (वर्तमानकालः)

लट्-लकारः (वर्तमानकालः)

| 'भाष्'-धातुः | | | | | | | |
|--------------|---------|-----------|----------|-------------|------------|--------------|--------------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | भाषते | भाषेते | भाषन्ते | प्रथमपुरुषः | सः भाषते | तौ भाषेते | ते भाषन्ते |
| मध्यमपुरुषः | भाषसे | भाषेथे | भाषध्वे | मध्यमपुरुषः | त्वं भाषसे | युवां भाषेथे | यूयं भाषध्वे |
| उत्तमपुरुषः | भाषे | भाषावहे | भाषामहे | उत्तमपुरुषः | अहं भाषे | आवां भाषावहे | वयं भाषामहे |

एवम् – स्पर्ध्, यत्, वृध् (वर्ध्), कूर्द्, कम्प्, राज् इत्यादयः

परस्मैपदि-धातूनां लृट्-लकारस्य रूपाणि (भविष्यत्कालः)

लृट्-लकारः (भविष्यत्कालः)

| 'पठ्'-धातुः | | | | 'लिख्'-धातुः | | | |
|-------------|-----------|-----------|------------|--------------|------------|------------|-------------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | पठिष्यति | पठिष्यतः | पठिष्यन्ति | प्रथमपुरुषः | लेखिष्यति | लेखिष्यतः | लेखिष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | पठिष्यसि | पठिष्यथः | पठिष्यथ | मध्यमपुरुषः | लेखिष्यसि | लेखिष्यथः | लेखिष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | पठिष्यामि | पठिष्यावः | पठिष्यामः | उत्तमपुरुषः | लेखिष्यामि | लेखिष्यावः | लेखिष्यामः |

एवम् – खाद्, वद्, मिल्, हस्, चल्, त्यज्, स्मृ (स्मर्), पा (पिब्), क्रीड्, नी (नय्), प्रच्छ् (पृच्छ्), भू (भव्), दृश् (पश्य्) गम् (गच्छ्), इत्यादयः

विशेष-धातवः

| 'अस्'-धातुः (भू इति आदेशः भवति) | | | | 'कृ'-धातुः | | | |
|---------------------------------|-----------|-----------|------------|-------------|-----------|-----------|------------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | भविष्यति | भविष्यतः | भविष्यन्ति | प्रथमपुरुषः | करिष्यति | करिष्यतः | करिष्यन्ति |
| मध्यमपुरुषः | भविष्यसि | भविष्यथः | भविष्यथ | मध्यमपुरुषः | करिष्यसि | करिष्यथः | करिष्यथ |
| उत्तमपुरुषः | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः | उत्तमपुरुषः | करिष्यामि | करिष्यावः | करिष्यामः |

एवम् – अन्यानि अपि श्रु - श्रोष्यति, दा - दास्यति, ज्ञा - ज्ञास्यति, क्रीज् - क्रेष्यति इत्यादयः

आत्मनेपदिधातूनां लृट्-लकारस्य रूपाणि (भविष्यत्कालः)

लृट्-लकारः (वर्तमानकालः)

| 'भाष्'-धातुः | | | | 'यत्'-धातुः | | | |
|--------------|-----------|-------------|-------------|-------------|----------|------------|------------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | भाषिष्यते | भाषिष्येते | भाषिष्यन्ते | प्रथमपुरुषः | यतिष्यते | यतिष्येते | यतिष्यन्ते |
| मध्यमपुरुषः | भाषिष्यसे | भाषिष्येथे | भाषिष्यध्वे | मध्यमपुरुषः | यतिष्यसे | यतिष्येथे | यतिष्यध्वे |
| उत्तमपुरुषः | भाषिष्ये | भाषिष्यावहे | भाषिष्यामहे | उत्तमपुरुषः | यतिष्ये | यतिष्यावहे | यतिष्यामहे |

एवम् – स्पर्ध्, वृध् (वर्ध), कूर्द्, कम्प्, राज् इत्यादयः

परस्मैपदि-धातूनां लङ्-लकारस्य रूपाणि (भूतकालः)

भूतकालः (वर्तमानकालः)

| 'पठ्'-धातुः | | | | 'लिख्'-धातुः | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|--------------|---------|-----------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | अपठत् | अपठताम् | अपठन् | प्रथमपुरुषः | अलिखत् | अलिखताम् | अलिखन् |
| मध्यमपुरुषः | अपठः | अपठतम् | अपठत | मध्यमपुरुषः | अलिखः | अलिखतम् | अलिखत |
| उत्तमपुरुषः | अपठम् | अपठाव | अपठाम | उत्तमपुरुषः | अलिखम् | अलिखाव | अलिखाम |

एवम् – लिख्, खाद्, वद्, प्रच्छ् (पृच्छ्), मिल्, क्रीड्, हस्, चल्, त्यज्, स्मृ (स्मर्), पा (पिब्), नी (नय्), भू (भव्), दृश् (पश्य्) गम् (गच्छ्) इत्यादयः

विशेष-धातवः

| 'अस्'-धातुः | | | | 'कृ'-धातुः | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|-------------|---------|-----------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | आसीत् | आस्ताम् | आसन् | प्रथमपुरुषः | अकरोत् | अकुरुताम् | अकुर्वन् |
| मध्यमपुरुषः | आसीः | आस्तम् | आस्त | मध्यमपुरुषः | अकरोः | अकुरुतम् | अकुरुत |
| उत्तमपुरुषः | आसम् | आस्व | आस्म | उत्तमपुरुषः | अकरवम् | अकुर्व | अकुर्म |

| 'श्रु'-धातुः | | | | 'दा'-धातुः | | | |
|--------------|------------|-------------|------------|-------------|---------|-----------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | अश्रुणोत् | अश्रुणुताम् | अश्रुण्वन् | प्रथमपुरुषः | अददात् | अदत्ताम् | अददुः |
| मध्यमपुरुषः | अश्रुणोः | अश्रुणुतम् | अश्रुणुत | मध्यमपुरुषः | अददाः | अदत्तम् | अदत्त |
| उत्तमपुरुषः | अश्रुणुवम् | अश्रुणुव | अश्रुणुम | उत्तमपुरुषः | अददाम् | अदद्व | अदद्य |



158

दीपकम् | कक्षा ७

| ‘ज्ञा’-धातुः | | | | ‘क्री’-धातुः | | | |
|--------------|---------|-----------|----------|--------------|-----------|-------------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | अजानात् | अजानीताम् | अजानन् | प्रथमपुरुषः | अक्रीणात् | अक्रीणीताम् | अक्रीणन् |
| मध्यमपुरुषः | अजानाः | अजानीतम् | अजानीत | मध्यमपुरुषः | अक्रीणाः | अक्रीणीतम् | अक्रीणीत |
| उत्तमपुरुषः | अजानाम् | अजानीव | अजानीम | उत्तमपुरुषः | अक्रीणाम् | अक्रीणीव | अक्रीणीम |

परस्मैपदि-धातूनां लोट्-लकारस्य रूपाणि (आज्ञार्थे, प्रार्थनार्थे, विध्यर्थे, निमन्त्रणार्थे, आमन्त्रणार्थे)

| ‘पठ्’-धातुः | | | | ‘लिख्’-धातुः | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|--------------|---------|-----------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | पठतु | पठताम् | पठन्तु | प्रथमपुरुषः | लिखतु | लिखताम् | लिखन्तु |
| मध्यमपुरुषः | पठ | पठतम् | पठत | मध्यमपुरुषः | लिख | लिखतम् | लिखत |
| उत्तमपुरुषः | पठानि | पठाव | पठाम | उत्तमपुरुषः | लिखानि | लिखाव | लिखाम |

एवम् – लिख्, खाद्, वद्, प्रच्छ् (पृच्छ्), मिल्, क्रीड्, हस्, चल्, त्यज्, स्मृ (स्मर्), पा (पिब), नी (नय), भू (भव), दृश् (पश्य) गम् (गच्छ) इत्यादयः

विशेष-धातवः

| ‘अस्’-धातुः | | | | ‘कृ’-धातुः | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|-------------|---------|-----------|-----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | अस्तु | स्ताम् | सन्तु | प्रथमपुरुषः | करोतु | कुरुताम् | कुर्वन्तु |
| मध्यमपुरुषः | एधि | स्तम् | स्त | मध्यमपुरुषः | कुरु | कुरुतम् | कुरुत |
| उत्तमपुरुषः | असानि | असाव | असाम | उत्तमपुरुषः | करवाणि | करवाव | करवाम |

| ‘श्रु’-धातुः | | | | ‘दा’-धातुः | | | |
|--------------|----------|-----------|-----------|-------------|---------|-----------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | शृणोतु | शृणुताम् | शृण्वन्तु | प्रथमपुरुषः | ददातु | दत्ताम् | ददतु |
| मध्यमपुरुषः | शृणु | शृणुतम् | शृणुत | मध्यमपुरुषः | देहि | दत्तम् | दत्त |
| उत्तमपुरुषः | शृण्वानि | शृण्वाव | शृण्वाम | उत्तमपुरुषः | ददानि | ददाव | ददाम |

| ‘ज्ञा’-धातुः | | | | ‘क्री’-धातुः | | | |
|--------------|---------|-----------|----------|--------------|----------|------------|-----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | जानातु | जानीताम् | जानन्तु | प्रथमपुरुषः | क्रीणातु | क्रीणीताम् | क्रीणन्तु |
| मध्यमपुरुषः | जानीहि | जानीतम् | जानीत | मध्यमपुरुषः | क्रीणीहि | क्रीणीतम् | क्रीणीत |
| उत्तमपुरुषः | जानानि | जानाव | जानाम | उत्तमपुरुषः | क्रीणानि | क्रीणाव | क्रीणाम |

परस्मैपदि-धातूनां विधिलिङ्-लकारस्य रूपाणि
(आज्ञार्थे, प्रार्थनार्थे, विध्यर्थे, निमन्त्रणार्थे, आमन्त्रणार्थे)

| ‘पठ्’-धातुः | | | | ‘लिख्’-धातुः | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|--------------|---------|-----------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | पठेत् | पठेताम् | पठेयुः | प्रथमपुरुषः | लिखेत् | लिखेताम् | लिखेयुः |
| मध्यमपुरुषः | पठेः | पठेतम् | पठेत | मध्यमपुरुषः | लिखेः | लिखेतम् | लिखेत |
| उत्तमपुरुषः | पठेयम् | पठेव | पठेम | उत्तमपुरुषः | लिखेयम् | लिखेव | लिखेम |

एवम् – खाद्, वद्, प्रच्छ् (पृच्छ्), मिल्, क्रीड्, हस्, चल्, त्यज्, स्मृ (स्मर्), पा (पिब्),
नी (नय्), भू (भव्), दृश् (पश्य्) गम् (गच्छ्) इत्यादयः

विशेष-धातवः

| ‘अस्’-धातुः | | | | ‘कृ’-धातुः | | | |
|-------------|---------|-----------|----------|-------------|----------|------------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | स्यात् | स्याताम् | स्युः | प्रथमपुरुषः | कुर्यात् | कुर्याताम् | कुर्युः |
| मध्यमपुरुषः | स्याः | स्यातम् | स्यात | मध्यमपुरुषः | कुर्याः | कुर्यातम् | कुर्यात |
| उत्तमपुरुषः | स्याम् | स्याव | स्याम | उत्तमपुरुषः | कुर्याम् | कुर्याव | कुर्याम |

| ‘श्रु’-धातुः | | | | ‘दा’-धातुः | | | |
|--------------|----------|------------|----------|-------------|---------|-----------|----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | शृणुयात् | शृणुयाताम् | शृणुयुः | प्रथमपुरुषः | दद्यात् | दद्याताम् | दद्युः |
| मध्यमपुरुषः | शृणुयाः | शृणुयातम् | शृणुयात | मध्यमपुरुषः | दद्याः | दद्यातम् | दद्यात |
| उत्तमपुरुषः | शृणुयाम् | शृणुयाव | शृणुयाम | उत्तमपुरुषः | दद्याम् | दद्याव | दद्याम |



| 'ज्ञा'-धातुः | | | | 'क्री'-धातुः | | | |
|--------------|----------|------------|----------|--------------|------------|--------------|-----------|
| पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| प्रथमपुरुषः | जानीयात् | जानीयाताम् | जानीयुः | प्रथमपुरुषः | क्रीणीयात् | क्रीणीयाताम् | क्रीणीयुः |
| मध्यमपुरुषः | जानीयाः | जानीयातम् | जानीयात | मध्यमपुरुषः | क्रीणीयाः | क्रीणीयातम् | क्रीणीयात |
| उत्तमपुरुषः | जानीयाम् | जानीयाव | जानीयाम | उत्तमपुरुषः | क्रीणीयाम् | क्रीणीयाव | क्रीणीयाम |

अधिकं जानीमः (सन्धीनां सामान्यः परिचयः)

सन्धयः

उच्चारणसमये परस्परं वर्णानाम् अत्यन्तं सामीप्यं 'संहिता' भवति । यदा संहिता भवति तदा वर्णेषु परिवर्तनं भवति । एवं प्रकारेण यत्र संहिताद्वारा वर्णानां परिवर्तनं भवति तस्यैव 'सन्धिः' इति नाम । व्याकरणे प्रमुखतया त्रयः सन्धयः सन्ति । तेषां पुनः बहवः प्रभेदाः सन्ति । यथा –

सन्धिः- (१) स्वरसन्धिः (२) व्यञ्जनसन्धिः (हल्-सन्धिः) (३) विसर्गसन्धिः

स्वरसन्धयः (अच्-सन्धयः) – सप्त प्रकाराः

१. सवर्णदीर्घसन्धिः २. गुणसन्धिः ३. वृद्धिसन्धिः ४. यण्-सन्धिः

५. अयादिसन्धिः ६. पूर्वरूपसन्धिः ७. प्रकृतिभावसन्धिः

एतेषु स्वरसन्धिषु केषाञ्चन सन्धीनां सामान्यः परिचयः अत्र प्रदत्तः वर्तते ।

१. सवर्णदीर्घ-सन्धिः – 'अ इ उ ऋ' एतेषां वर्णानाम् अनन्तरं यदि समानवर्णः भवति तर्हि तयोः द्वयोः वर्णयोः स्थाने एकः दीर्घः आदेशः भवति ।

नियमः – (क) अ + अ = आ, (ख) अ + आ = आ, (ग) आ + अ = आ, (घ) आ + आ = आ

| दीर्घस्य 'आ'वर्णादेशस्य उदाहरणानि पठन्तु । | दीर्घस्य 'ई'वर्णादेशस्य उदाहरणानि पठन्तु । |
|--|--|
| तत्रापि = तत्र + अपि (अ + अ = आ) | रवीन्द्र = रवि + इन्द्रः (इ + इ = ई) |
| तथापि = तथा + अपि (आ + अ = आ) | गौरीति = गौरी + इति (ई + इ = ई) |
| दीर्घस्य 'ऊ'वर्णादेशस्य उदाहरणानि पठन्तु । | दीर्घस्य 'ऋ'वर्णादेशस्य उदाहरणानि पठन्तु । |
| गुरुपदेशः = गुरु + उपदेशः (उ + उ = ऊ) | मातृणम् = मातृ + ऋणम् (ऋ + ऋ = ऋ) |
| वधूपचारः = वधू + उपचारः (ऊ + उ = ऊ) | भ्रातृणम् = भ्रातृ + ऋणम् (ऋ + ऋ = ऋ) |

२. गुण-सन्धि: – अ, आ वर्णयोः इ, ई परे ‘ए’कारः आदेशः भवति। अ, आ वर्णयोः उ, ऊ परे ‘ओ’कारः आदेशः भवति। तथैव अ, आ वर्णयोः ऋ/ॠ परे ‘अर्’ आदेशः भवति। एषः एव “गुणसन्धिः” इति। “ए, ओ, अर्” एते गुणाक्षराणि भवन्ति।

नियमः – (1) अ/आ + इ/ई = ए, (2) अ/आ + उ/ऊ = ओ, (3) अ/आ + ऋ/ॠ = अर्

| | |
|---|---|
| अ, आ वर्णयोः इ, ई परे ‘ए’कारस्य आदेशः। | अ, आ वर्णयोः उ, ऊ परे ‘ओ’कारस्य आदेशः। |
| सुरेन्द्रः = सुर + इन्द्रः (अ + इ = ए) | परोपकारः = पर + उपकारः (अ + उ = ओ) |
| कथेति = कथा + इति (आ + इ = ए) | महोत्सवः = महा + उत्सवः (आ + उ = ओ) |
| अ, आ वर्णयोः ऋ, ॠ परे ‘अर्’आदेशः। | एवं प्रकारेण गुणसन्धेः अन्यानि उदाहरणानि भवितुमर्हन्ति। |
| सप्तर्षिः = सप्त + ऋषिः (अ + ऋ = अर्) | |
| महर्षिः = महा + ऋषिः (आ + ऋ = अर्) | |

३. वृद्धि-सन्धि: – अ, आ वर्णयोः ए, ऐ परे ‘ऐ’कारः आदेशः भवति। अ, आ वर्णयोः ओ, औ परे ‘औ’कारः आदेशः भवति। तथैव अ, आ वर्णयोः अर्, आर् परे ‘आर्’ आदेशः भवति। एषः एव “वृद्धिसन्धिः” इति। “ऐ, औ, आर्” एते वृद्धि-अक्षराणि भवन्ति।

नियमः – (1) अ/आ + ए/ऐ = ऐ, (2) अ/आ + ओ/औ = औ, (3) अ/आ + अर्/आर् = आर्

| | |
|--|---|
| अ, आ वर्णयोः ए/ऐ परे ‘ऐ’कारस्य आदेशः। | अ, आ वर्णयोः ओ, औ परे ‘औ’कारस्य आदेशः। |
| एकैकम् = एक + एकम् (अ + ए = ऐ) | परमौषधिः = परम + ओषधिः (अ + ओ = औ) |
| तथैव = तथा + एव (आ + ए = ऐ) | मधुरौदनम् = मधुर + ओदनम् (अ + ओ = औ) |

४. यण्-सन्धि: – इ/ई, उ/ऊ, ऋ/ॠ, लृ वर्णानां असवर्णस्वरे परे क्रमशः ‘य्, व्, र्, ल्’ आदेशाः भवन्ति। इ/ई वर्णयोः असवर्णस्वरे परे ‘य’कारः आदेशः भवति। उ/ऊ वर्णयोः असवर्णस्वरे परे ‘व’कारः आदेशः भवति। ऋ/ॠ वर्णयोः असवर्णस्वरे परे ‘र्’कारः आदेशः भवति। ‘लृ’ वर्णात् असवर्णस्वरे परे ‘ल्’कारः आदेशः भवति। एषः एव “यण्सन्धिः” इति। “य्, व्, र्, ल्” एते यण्-वर्णाः भवन्ति।

नियमः – (1) अ/आ + ए/ऐ = ऐ, (2) अ/आ + ओ/औ = औ, (3) अ/आ + अर्/आर् = आर्

| | |
|---|---|
| इ/ई वर्णयोः असवर्णस्वरे परे ‘य’कारस्य आदेशः। | उ/ऊ वर्णयोः असवर्णस्वरे परे ‘व’कारस्य आदेशः। |
| इत्यपि = इति + अपि (इ + अ = य) | मध्वरिः = मधु + अरिः (उ + अ = व) |
| तान्येव = तानि + एव (इ + ए = ये) | स्वागतम् = सु + आगतम् (उ + आ = वा) |

